



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	19-9-24	4	1-4

दैनिक भास्कर

फूलगोभी की अगेती व मध्य किस्मों की रोपाई का समय सितंबर से अक्टूबर तक फूलगोभी की अगेती किस्म हिसार-1 और बंदगोभी की प्राइड ऑफ इंडिया लाभदायक

यशपाल सिंह | हिसार

फूलगोभी की मध्य मौसमी किस्मों हिसार-1 के लिए खेत की तैयारी कर लेनी चाहिए। यह पौध सितंबर माह के अंत और अक्टूबर के शुरू में लगाने योग्य हो जाएगी। फूलगोभी की अगेती किस्मों में पौध लगाने की दूरी 45-30 सेंटीमीटर व मध्यम वर्ग में 60-60 सेंटीमीटर रखें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि पछेती किस्म स्नोबाल-16 की बिजाई भी नर्सरी में इस माह के अंत में शुरू की जा सकती है। इस समय अगेती गोभी को सूंड़ी आदि के प्रकोप से बचाने के लिए 400 मिली. मैलाथियान 50 ईसी. या 60 मिली. डायक्लोरवास 76 ई सी को 250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ फसल पर हर 7-10 दिन बाद आवश्यकतानुसार छिड़काव करें। अगेती किस्म पूसा कातकी के खेत की उचित देखभाल करें। सिंचाई करें और रोपाई के लगभग तीन सप्ताह बाद प्रति एकड़ 35 किलोग्राम यूरिया खाद 16 किलोग्राम नाइट्रोजन, फूल आने की अवस्था में भी 35 किलोग्राम यूरिया खाद 16 किलोग्राम नाइट्रोजन से टॉप ड्रेसिंग करें। नाइट्रोजन खाद देने के बाद सिंचाई करें।

बंदगोभी व गांठगोभी के लिए भी खेत करें तैयार



गोभी की फसल का फाइनल फोटो।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि बंदगोभी व गांठगोभी की पौध तैयार करने के लिए नर्सरी में बिजाई करें। बंदगोभी की अगेती किस्म, प्राइड ऑफ इंडिया या गोल्डन एकड़ व पछेती मौसमी किस्मों में ड्रम हेड लेट लगाएं। एक एकड़ के लिए लगभग 200-250 ग्राम बीज की आवश्यकता होगी। गांठ-गोभी की किस्म, अर्ली व्हाइट वियना प्रयोग करें। 800 ग्राम बीज प्रति एकड़ की आवश्यकता होगी। खेत के लिए पौध तैयार होने

में लगभग 5-6 सप्ताह का समय लगेगा। इस बीच खेत की तैयारी करें। बीज को बोने से पहले कैप्टान दवा 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

आलू के अच्छे बीज कुफरी चंद्रमुखी, जवाहर, सिंदुरी का प्रबंध कर लें

सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सुरेश तेहलान ने बताया कि आलू के लिए खेत की तैयारी करें और अच्छे बीज कुफरी चंद्रमुखी, कुफरी जवाहर, कुफरी सिंदुरी, कुफरी बादशाह या कुफरी सतलुज, कुफरी बहार व कुफरी पुष्कर किस्मों की 10-12 विंटल एकड़ की दर से प्रबंध करें। सलाद की बिजाई नर्सरी में इस माह की जा सकती है। एक एकड़ के लिए 300-400 ग्राम बीज की आवश्यकता होगी। अरबी की फसल में नाइट्रोजन खाद की दूसरी मात्रा आधी बची हुई 44 किलोग्राम यूरिया खाद प्रति एकड़ देकर मिट्टी चढ़ा दें तथा सिंचाई करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सूमाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	19.9.24	4	6-8

हकृवि व न्यूजीलैंड की मैसी विवि के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से करेंगे शोध : प्रो. बीआर काम्बोज

जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर विषय पर कार्यशाला का आयोजन

भास्कर न्यूज | हिंसार

विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि कार्यशाला में हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे। परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि

जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीओक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं।

उन्होंने बताया कि इसके लिए हिमालय रीजन, उतराखंड व दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से मोरिंगा के सैंपल भी लिए जाएंगे। मोरिंगा दुनिया के सबसे पौष्टिक फसलों में से एक फसल हैं और इसके अनेक फायदे हैं। मोरिंगा में कैरोटिन, प्रोटीन, विटामिन सी, कैल्शियम, पोटैशियम और आयरन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। मोरिंगा के अनेक उपयोगों ने वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और किसानों

का ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने मोरिंगा फसल की अच्छी पैदावार लेने के लिए जलवायु परिस्थितियों के बारे में बताते हुए कहा कि मोरिंगा 25 से 35 डिग्री के बीच सबसे अच्छा बढ़ता है, लेकिन यह लगभग 48 डिग्री तक तापमान और हल्की ठंड भी सहन कर सकता है। मोरिंगा की 250 से 1500 मिलीमीटर तक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी पैदावार ली जा सकती है। मोरिंगा फसल के लिए रेतीली दोमट या दोमट मिट्टी उपयुक्त है और यह 6 से 8 की पीएच को सहन कर सकता है। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं जिसमें न्यूजीलैंड, डैनमार्क व आस्ट्रेलिया के प्रतिष्ठित संस्थानों के वैज्ञानिकगण अपना व्याख्यान देंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	19.9.24	11	2-6

हकृवि में मोरिंगा की जागरूकता को लेकर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन हकृवि और नमैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर करेंगे शोध

10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया।

हरिभूमि न्यूज ▶ हिंसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मोरिंगा की क्षमता को पहचानना: विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि यह कार्यशाला मानव



हिसार। कुलपति प्रो. बी.आर. कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए।

संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्पार्क' परियोजना के तहत आयोजित की जा रही है। कार्यशाला में हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे।

परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया

जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं। उन्होंने बताया कि इसके लिए हिमालय रीजन, उतराखंड व दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से मोरिंगा के सैंपल भी लिए जाएंगे। मोरिंगा दुनिया के सबसे पौष्टिक फसलों में से एक फसल है और इसके अनेकों फायदे हैं। मोरिंगा में कैरोटीन, प्रोटीन, विटामिन सी, कैल्शियम, पोटैशियम और आयरन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। मोरिंगा के अनेक उपयोगों ने वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं

25 से 35 डिग्री के बीच तापमान

उन्होंने मोरिंगा फसल की अच्छी पैदावार लेने के लिए जलवायु परिस्थितियों के बारे में बताते हुए कहा कि मोरिंगा 25 से 35 डिग्री के बीच सबसे अच्छा बढ़ता है, लेकिन यह लगभग 48 डिग्री तक तापमान और हल्की ठंड भी सहन कर सकता है। मोरिंगा की 250 से 1500 मिलीमीटर तक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी पैदावार ली जा सकती है। मोरिंगा फसल के लिए रेतीली दोमट या दोमट मिट्टी उपयुक्त है और यह 6 से 8 की पीएच को सहन कर सकता है।

मोरिंगा उष्णकटिबंधीय पेड़ : डॉ. गर्ग

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि मोरिंगा को 'इमस्टिक' या सहजन के नाम से भी जाना जाता है। यह एक उष्णकटिबंधीय पेड़ है व भारत और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में इसकी खेती होती है। इसके पेड़ का हर हिस्सा स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। इसकी पत्तियां प्रोटीन का एक बड़ा स्रोत है और इसमें सभी महत्वपूर्ण एमीनो एसिड भी होते हैं। मोरिंगा की पत्तियां शरीर में ऊर्जा बढ़ाने के साथ-साथ डायबिटीज, इन्फ्लूएंजा, हृदय और लीवर सहित विभिन्न बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल की जाती हैं।

दो शोधार्थी मैसी यूनिवर्सिटी का दौरा

विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस ने बताया कि मोरिंगा पर शोध के लिए विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के दो शोधार्थी मैसी यूनिवर्सिटी का दौरा करेंगे। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश नेरा ने कार्यशाला में आए हुए सभी प्रतिभागियों एवं अधिकारियों का स्वागत किया जबकि धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. अक्षय भूकर ने पारित किया। इस अवसर पर सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, शिक्षक, नैर शिक्षक, प्रतिभागी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

और किसानों का ध्यान आकर्षित किया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	19-9-24	3	1-4

हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से करेंगे शोध कार्य: प्रो. काम्बोज

हिसार, 18 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मोरिंगा' की क्षमता को पहचानना: विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि यह कार्यशाला मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्पार्क' परियोजना के तहत आयोजित की जा रही है। कार्यशाला में हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे। परियोजना के



कुलपति प्रो. बी.आर. कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं। उन्होंने बताया कि इसके लिए हिमालय रीजन, उत्तराखंड व दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से मोरिंगा के सैंपल

भी लिए जाएंगे।

उन्होंने मोरिंगा फसल की अच्छी पैदावार लेने के लिए जलवायु परिस्थितियों के बारे में बताते हुए कहा कि मोरिंगा 25 से 35 डिग्री के बीच सबसे अच्छा बढ़ता है, लेकिन यह लगभग 48 डिग्री तक तापमान और हल्की ठंड भी सहन कर सकता है। मोरिंगा की 250 से 1500 मिलीमीटर तक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी पैदावार ली जा सकती है। मोरिंगा फसल के लिए रेतीली

दोमट या दोमट मिट्टी उपयुक्त है और यह 6 से 8 की पीएच को सहन कर सकता है। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं जिसमें न्यूजीलैंड, डैनमार्क व आस्ट्रेलिया के प्रतिष्ठित संस्थानों के वैज्ञानिकगण अपना व्याख्यान देंगे।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि मोरिंगा को 'ड्रमस्टिक' या सहजन के नाम से भी जाना जाता है।

यह एक उष्णकटिबंधीय पेड़ है व भारत और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में इसकी खेती होती है। विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस ने बताया कि मोरिंगा पर शोध के लिए विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के दो शोधार्थी मैसी यूनिवर्सिटी का दौरा करेंगे। इसी कड़ी में मोरिंगा को लेकर विश्वविद्यालय में इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक त्रिभूज	19.9.24	4	6-8

हकृवि और मैसी यूनिवर्सिटी मोरिंगा पर करेंगे संयुक्त रूप से शोध

■ प्रो. बीआर काम्बोज ने किसान अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन



हिसार, 18 सितंबर (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मोरिंगा की क्षमता को पहचानना विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय

हिसार में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए-हप्र

के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि यह कार्यशाला मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्पार्क' परियोजना के तहत आयोजित की जा रही है। कार्यशाला में हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से

शोध कार्य करेंगे। परियोजना के बारे में उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	19.9.24	4	3-6

एचएयू व मैसी विवि के वैज्ञानिक मोरिंगा पर करेंगे शोध कार्य एचएयू में मोरिंगा की जागरूकता को लेकर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में मोरिंगा की क्षमता को पहचानना : विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर विषय पर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग की तरफ से आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबेज ने किया।



कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर। स्रोत: संस्थान

उन्होंने कहा कि एचएयू और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं,

जिसमें न्यूजीलैंड, डेनमार्क व आस्ट्रेलिया के प्रतिष्ठित संस्थानों के वैज्ञानिक अपना व्याख्यान देंगे।

कुलपति ने बताया कि जलवायु परिवर्तन

एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज व पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसके लिए हिमालय रीजन, उत्तराखंड व दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से मोरिंगा के सैपल भी लिए जाएंगे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि मोरिंगा को 'इमस्टिक' या सहजन के नाम से भी जाना जाता है। भारत और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में इसकी खेती होती है। इसकी पत्तियां प्रोटीन का एक बड़ा स्रोत है और इसमें सभी महत्वपूर्ण एमीनो एसिड भी होते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	19.9.24	3	7-8

हकृवि व न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक करेंगे शोध

जास-हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मोरिंगा की क्षमता को पहचानना, विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर विषय पर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ। शुभारंभ कुलपति

प्रो. बीआर काम्बोज ने किया। कुलपति ने कहा कि यह कार्यशाला मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्पार्क' परियोजना के तहत आयोजित की जा रही है। कार्यशाला में हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	18.09.2024	---	--

हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से करेंगे शोध कार्य : प्रो. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिंसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मोरिंगा की क्षमता को पहचानना-विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जेव रसायन विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि यह कार्यशाला मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्मार्क' परियोजना के तहत आयोजित की जा रही है। कार्यशाला में हकृवि और न्यूजीलैंड



कुलपति प्रो. बी.आर. कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए।

की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे। परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सिडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने

वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं। उन्होंने बताया कि इसके लिए हिमालय रीजन, उतराखंड व दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से मोरिंगा के सैमपल भी लिए जाएंगे। मोरिंगा दुनिया के सबसे पौष्टिक

फसलों में से एक फसल है और इसके अनेकों फायदे हैं। मोरिंगा में केरोटीन, प्रोटीन, विटामिन सी, कैल्शियम, पोटेशियम और आयरन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। मोरिंगा के अनेक उपयोगों ने वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और किसानों का ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने मोरिंगा फसल की अच्छी पैदावार लेने के लिए जलवायु परिस्थितियों के बारे में बताते हुए कहा कि मोरिंगा 25 से 35 डिग्री के बीच सबसे अच्छा बढ़ता है, लेकिन यह लगभग 48 डिग्री तक तापमान और हल्की ठंड भी सहन कर सकता है। मोरिंगा की 250 से 1500 मिलीमीटर तक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी पैदावार ली जा सकती है। मोरिंगा फसल के लिए रेतली दोमट या दोमट मिट्टी उपयुक्त है और यह 6 से 8 की

पीएच को सहन कर सकता है। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं जिसमें न्यूजीलैंड, डैनमार्क व आस्ट्रेलिया के प्रतिष्ठित संस्थानों के वैज्ञानिकगण अपना व्याख्यान देंगे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजवीर गर्ग ने बताया कि मोरिंगा को 'ड्रमस्टिक' या सहजन के नाम से भी जाना जाता है। यह एक उष्णकटिबंधीय पेड़ है व भारत और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में इसकी खेती होती है। इसके पेड़ का हर हिस्सा स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। इसकी पत्तियां प्रोटीन का एक बड़ा स्रोत हैं और इसमें सभी महत्वपूर्ण एमिनो एसिड भी होते हैं। मोरिंगा की पत्तियां शरीर में ऊर्जा बढ़ाने के साथ-साथ डायबिटीज, इम्यून सिस्टम, हड्डियों और लीवर सहित विभिन्न बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल की जाती हैं।

विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस ने बताया कि मोरिंगा पर शोध के लिए विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के दो शोधार्थी मैसी यूनिवर्सिटी का दौरा करेंगे। इसी कड़ी में मोरिंगा को लेकर विश्वविद्यालय में इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेग ने कार्यशाला में आए हुए सभी प्रतिभागियों एवं अधिकारियों का स्वागत किया जबकि धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. अश्वय भूकर ने पारित किया। इस अवसर पर सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, शिक्षक, गैर शिक्षक, प्रतिभागी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	19.09.2024	---	--

हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से करेंगे शोध कार्य : प्रो. बी.आर. काम्बोज



कुलपति प्रो. बी.आर. कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए।

सवेरा न्यूज/सुरेन्द्र सोधी, हिस्सार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मोरिंगा की क्षमता को पहचानना: विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि यह कार्यशाला मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्मार्क' परियोजना के तहत आयोजित की जा रही है। कार्यशाला में हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे। परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटी-ओक्सिडेंट प्रोपटीज पर पड़नेवाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं। उन्होंने बताया कि इसके लिए हिमालय रीजन, उतराखंड व दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से मोरिंगा के सैपल भी लिए जाएंगे। उन्होंने मोरिंगा फसल की अच्छी पैदावार लेने के लिए जलवायु परिस्थितियों के बारे में बताते हुए कहा कि मोरिंगा 25 से 35 डिग्री के बीच सबसे अच्छा बढ़ता है, लेकिन यह लगभग 48 डिग्री तक तापमान और हल्की ठंड भी सहन कर सकता है। मोरिंगा की 250 से 1500 मिलीमीटर तक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी पैदावार ली जा सकती है। मोरिंगा फसल के लिए रेतीली दोमट या दोमट मिट्टी उपयुक्त है और यह 6 से 8 की पीएच को सहन कर सकता है। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं जिसमें न्यूजीलैंड, डैनमार्क व आस्ट्रेलिया के प्रतिभाषित संस्थानों के वैज्ञानिकों अपना व्याख्यान देंगे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजेश्वर गर्ग ने बताया कि मोरिंगा को 'ड्रमस्टिक' या सहजन के नाम से भी जाना जाता है। यह एक उष्णकटिबंधीय पेड़ है व भारत और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में इसकी खेती होती है। विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोक्स ने बताया कि मोरिंगा पर शोध के लिए विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के दो शोधार्थी मैसी यूनिवर्सिटी का दौरा करेंगे। इसी कड़ी में मोरिंगा को लेकर विश्वविद्यालय में इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने कार्यशाला में आए हुए सभी प्रतिभागियों एवं अधिकारियों का स्वागत किया जबकि धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. अक्षय भूकर ने पारित किया। इस अवसर पर सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, शिक्षक, गैर शिक्षक, प्रतिभागी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि किरण न्यूज	18.09.2024	---	--



Hari Kiran News

14h

एचएयू व न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से करेंगे शोध कार्य : प्रो. बीआर कम्बोज -हकृवि में मोरिंगा की जागरूकता बारे 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन-

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मोरिंगा की क्षमता को पहचानना:विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने बुधवार को शुभारंभ अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि यह कार्यशाला मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्पार्क' परियोजना के तहत आयोजित की जा रही है। कार्यशाला में हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे। परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीओक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं। उन्होंने बताया कि इसके लिए हिमालय रीज़न, उत्तराखंड व दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से मोरिंगा के सैपल भी लिए जाएंगे। मोरिंगा दुनिया के सबसे पौष्टिक फसलों में से एक फसल है और इसके अनेकों फायदे हैं। मोरिंगा में कैरोटीन, प्रोटीन, विटामिन सी, कैल्शियम, पोटैशियम और आयरन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। मोरिंगा के अनेक उपयोगों ने वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और किसानों का ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने मोरिंगा फसल की अच्छी पैदावार लेने के लिए जलवायु परिस्थितियों के बारे में बताते हुए कहा कि मोरिंगा 25 से 35 डिग्री के बीच सबसे अच्छा बढ़ता है, लेकिन यह लगभग 48 डिग्री तक तापमान और हल्की ठंड भी सहन कर सकता है। मोरिंगा की 250 से 1500 मिलीमीटर तक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी पैदावार ली जा सकती है। मोरिंगा फसल के लिए रेतीली दोमट या दोमट मिट्टी उपयुक्त है और यह 6 से 8 की पीएच को सहन कर सकता है। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं जिसमें न्यूजीलैंड, डैनमार्क व आस्ट्रेलिया के प्रतिष्ठित संस्थानों के वैज्ञानिकगण अपना व्याख्यान देंगे।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि मोरिंगा को 'ड्रमस्टिक' या सहजन के नाम से भी जाना जाता है। यह एक उष्णकटिबंधीय पेड़ है व भारत और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में इसकी खेती होती है। इसके पेड़ का हर हिस्सा स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। इसकी पत्तियां प्रोटीन का एक बड़ा स्रोत है और इसमें सभी महत्वपूर्ण एमीनो एसिड भी होते हैं। मोरिंगा की पत्तियां शरीर में ऊर्जा बढ़ाने के साथ-साथ डायबिटीज, इम्यून सिस्टम, हड्डियां और लीवर सहित विभिन्न बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल की जाती हैं।

विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस ने बताया कि मोरिंगा पर शोध के लिए विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के दो शोधार्थी मैसी यूनिवर्सिटी का दौरा करेंगे। इसी कड़ी में मोरिंगा को लेकर विश्वविद्यालय में इस अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने कार्यशाला में आए हुए सभी प्रतिभागियों एवं अधिकारियों का स्वागत किया जबकि धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. अक्षय भूकर ने पारित किया। इस अवसर पर सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, शिक्षक, गैर शिक्षक, प्रतिभागी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हे लो हि सार	19.09.2024	---	--

हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से करेंगे शोध कार्य: प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मोरिंगा की क्षमता को पहचानना: विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि यह कार्यशाला मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्मार्क' परियोजना के तहत आयोजित की जा रही है।

कार्यशाला में हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे। परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी



देते हुए उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया

जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं। उन्होंने बताया कि इसके लिए हिमालय रोजन, उतराखंड

व दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से मोरिंगा के सैंपल भी लिए जाएंगे। मोरिंगा दुनिया के सबसे पौष्टिक फसलों में से एक फसल है और इसके अनेकों फायदे हैं। मोरिंगा में कैरोटीन, प्रोटीन,

हकृवि में मोरिंगा की जागरूकता को लेकर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन

विटामिन सी, कैल्शियम, पोटेशियम और आयरन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। मोरिंगा के अनेक उपयोगों ने वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और किसानों का ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने मोरिंगा फसल की अच्छी पैदावार लेने के लिए जलवायु परिस्थितियों के बारे में बताते हुए कहा कि मोरिंगा 25 से 35 डिग्री के बीच सबसे अच्छा बढ़ता है, लेकिन यह लगभग 48 डिग्री तक तापमान और हल्की ठंड भी सहन कर सकता है। मोरिंगा की 250 से 1500 मिलीमीटर तक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी पैदावार ली जा सकती है।